सरीफन की सफलता की कहानी स्वयं की जुबानी

मेरा नाम सरीफन है मेरा जन्म कारोली गांव में एक गरीब किसान परिवार में हुआ मेरे पिताजी का नाम श्री हकमुद्दीन खांन है मेरे 4 भाई एव हम 3 बहने है। परिवार कि आर्थिक स्थिती दयनीय होने के कारण दो वक्त कि रोटी के लिये भी कई बार किसी ओर से मदद लेनी होती थी मेरे पिताजी ने मेरा विवाह श्री रहमुद्दीन खांन ग्राम बायलाबास, राताखुर्द के साथ कर दिया।

मेरे ससुराल पक्ष कि आर्थिक स्थिती भी दयनीय थी ओर पिताजी के घर की तरह यहा पर भी दो वक्त के खाने के लाले पड़े रहते थे। शादी के बाद मेरे 6 बच्चे हुये जिनमें 4 लडकी एवं 2 लडके है। बच्चे होने के बाद आर्थिक स्थिती ओर खराब हो गई ओर ससुर साहब ने हमें परिवार से अलग कर दिया अब पुरे परिवार की जिम्मेदारी मेरे पति एवं मेरे कंधों पर थी हम दोनों जितोड महनत–मजदुरी कर जो कमाते वो सब परिवार के लालन–पालन में खर्च हो जाता एवं साहुकार से अलग से कर्ज भी लेना पड़ता और धिरे–धिरे हमारे ऊपर साहुकार का कर्ज इतना हो गया की साहुकार हमारे घर–जमीन को अपने कब्जे में लेने की बात करने लग गया।

हमें कुछ भी नहीं सुझ रहा था हम साहुकार के आगे हाथ जोड़ते उसके पैर पडते और कुछ दिन कि मोहलत ओर मिल जाती लेकिन कोई स्थाई समाधान नहीं निकल पा रहा था और इस चिंता में हम रात–दिन कुछ नया करने की सोचते रहते परन्तु हमारे पास धन का अभाव होने से कोई नया काम भी प्रारम्भ नहीं कर पा रहे थे।

इसी दौरान हमारे गांव में स्पैक्ट्रा संस्था के कार्यकर्ता महिलाओं को स्वयं सहायता समूह के बारे में जानकारी देने आये और महिलाओं को अपनी छोटी–छोटी बचत एवं साहुकार से किस प्रकार छुटकारा मिल सकता है एवं महिला स्वयं किस प्रकार आत्मनिर्भर बन सकती है के बारे में समझा रहे थे। मुझे ज्यादा कुछ समझ नहीं आया परन्तु मुझे कुछ नया करने की राह दिखाई दे रही थी और मेंने स्वंय सहायता समूह में जुड़ने का मन ही मन संकल्प किया और समुदाय बैठक सम्पन्न होने के तुरन्त बाद में संस्था कार्यकर्ता के पास गई और स्वयं सहायता समूह किस प्रकार बनता है और में उसमें केसे जुड सकती हु के बारे में जानकारी ली।

स्पैक्ट्रा संस्था के सहयोग से हम 13 महिलाओं ने स्पैक्ट्रा अनीशा स्वयं सहायता समूह का गठन मई–2014 मे किया एवं नियमीत बैठक एवं बचत करना प्रारम्भ किया जिससे हमने छोटी–छोटी बचत करने की आदत लगी एव हम हर जगह से कुछ धन राशि बचाने कि कोशिश करने लगे।

समूह से जुडने के पश्चात स्पैक्ट्रा संस्था द्वारा हमें समूह प्रबंधन, नेतृत्व विकास, वित्तिय प्रबंधन, उन्नत पशु प्रबंधन, अजोला, वर्मीकम्पोष्ट, आधारशीला, जैण्डर, उद्यमिताविकास आदी प्रशिक्षण एवं जगह–जगह भ्रमण

करवाकर खेती एवं पशुपालन के पुराने तरिको कि जगह उन्नत तकनिको के बारे में जानकारी दी।

संस्था से मुझे वर्ष 2014 में एक उन्नत नश्ल (तोता पुरी) कि बकरी प्राप्त हुयी जो कि मुझे एक गिफ्ट के रूप में प्राप्त हुयी एवं अगले वर्ष मुझे किसी अन्य बहन को उसी तरह कि एक बकरी गिफ्ट के रूप में देनी थी।

इसी दौरान संस्था के सहयोग से हमारे समूह को बैंक से लोन प्राप्त हुआ जिसकी ब्याज दर कम थी और मासिक आसान किश्तो में हमें लोन का पुर्नभुगतान करना था तो हमने उस बैंक लोन से बकरी हेतु उन्नत बाडा, चारा एवं अन्य संसाधन खरिदे ओर कुछ धन राशि से अपने परिवार को चलाया।

संस्था के द्वारा प्राप्त प्रशिक्षणों के अनुसार बकरी पालन को पूरे दिल से किया एवं समय–समय पर संस्था के सहयोग से बकरी को डी–वर्मीग, टिकाकरण करवाती रही एवं बकरी हेतु अजोला निर्माण करवाया, जैविक खेती हेतु बकरी के खाद का वर्मी बैड तैयार करवाया जिससे वर्मीकम्पोष्ट खाद प्राप्त करने लगी एवं मेरी लागत बहुत कम हो गयी और मेरी कमाई अधिक होने लगी।

संस्था के सहायोग से हम सभी महिला बहनो ने मिलकर एक कम्पनी रजिस्टर्ड करवाई है जिसका नाम स्पैक्ट्रा आदर्श उत्पादक महिला प्रोड्युसर कम्पनी है में भी कम्पनी की शेयर धारक हूँ एवं कम्पनी के द्वारा चलाये जा रहे मसाला, सोलर, हिमाल्या, बकरा आदि व्यवसायो को आगे बढ़ाने का प्रयास करती हूँ एवं

कम्पनी द्वारा हमारे उत्पाद जैसे बकरा–बकरी, फसल आदि को उच्च दाम में बेचने का कार्य किया जाता है जिससे हमें अधिक मुनाफा होता है।

स्पैक्ट्रा संस्था से प्राप्त बकरी से जो बच्चे पैदा हुये वो भी उन्नत नश्ल तोतापुरी के थे तो जो नर बच्चे पैदा हुये उन्हे मेने संस्था के सहयोग से खस्सी करवाया एवं मादा बच्चों को प्रजनन हेतु रखा एवं नर बच्चो कि परवरिस संस्था द्वारा सिखाये अनुसार कर ईद के मोके पर जिदां वजन के हिसाब से हमारी महिलाओं कि कम्पनी (स्पैक्ट्रा आदर्श उत्पादक महिला प्रोड्युसर कम्पनी) के माध्यम से दिल्ली, गुजरात, मुंबई, जयपुर, बिहार एवं अन्य जगह बेच कर अच्छा मुनाफा कमाना प्रारम्भ किया एवं धिरे–धिरे मेने साहुकार का कर्ज चुकता कर दिया एवं आज मेरे परिवार कि आर्थिक स्थिती सही है और मेने वर्ष 2014 से आज तक संस्था द्वारा सिखाये गये तरिके से बकरी पालन कर लगभग 22,49,000/– रूप्ये कि कमाई कि है में संस्था को दिल से धन्यवाद करती हु।

संस्था से जो बकरी मुझे प्राप्त हुयी थी उसी की एक मादा बच्ची को मेने एक बहन को गिफ्ट कर दिया एवं मेने मेरे 2 बच्चों कि शादी भी कर ली है एवं मेरे ऊपर किसी का कोई कर्ज भी नहीं है।

संस्था के सहयोग एवं मेरी मेहनत एवं लगन से आज में आस–पास के सभी गांवों मे एक मिसाल कि तरह सामने आयी हु ओर लोग मुझसे जानकारी लेने आते है एवं में स्वयं भी महिला बहनो को स्वयं सहायता समूह बनाने के लिये प्रेरित करती हु एवं संस्था द्वारा प्राप्त प्रशिक्षणों को बहनो को बताती रहती हु जिससे वो भी मेरी तरह अपने पेरो पर खडी हो सके एवं आत्मनिर्भर बनकर रह सके।